।। पंचम अध्याय ।।

** उ प सं हा र **

महाप्राण महाकवि निराला का साहित्य बहुमुखी हैं। उनका साहित्य युगानुस्प हैं। निराला का जीवन एक लम्बे संघर्ष की कहानी हैं। उनका समस्त साहित्य एक लम्बे जीवन व्यापी संघर्ष की कहानी हैं। वह सदैव नवीन की खोज करते रहे हैं। और प्राचीन के प्रति विद्रोह करते हुए दिखाई देते हैं। इसलिए निराला जी की काव्य साधना के विभिन्न पग हिन्दी काव्य के प्रगति के विभिन्न बढते चरण हैं।

निरालाजी का जन्म बंगाल में एक कान्यकुब्ज ब्राम्हण परिवार में हुआ। एण्ट्रेन्स तक पढकर उन्होने स्वाध्याय से संस्कृत, दर्शनशास्त्र, अँग्रेजी तथा बंगला साहित्य का अध्ययन किया। पत्नी के संपर्क में हिन्दी प्रेम उत्कर्षता पर पहुँचा। प्रारंभ में उन्होने बंगला और संस्कृत में कविताएँ की। महावीर प्रसाद द्विवेदीजी के प्रोत्साहन से वे हिन्दी के क्षेत्र में आए। समन्वय, मतवाला आदि पत्रिकाओ में उन्होने संपादन का कार्य किया। वे स्वभाव से क्रांतिकारी तथा रुढियों, बंधनों के विरोधी थे।

निराला का काव्य साधना का परिचय जिसमें उन्होंने लिखी कुल तेरह काव्यग्रंथो संक्षेप में जानकारी है। निरालाजी द्वारा विरचित संपूर्ण ग्रंथो की संख्या सत्तर के आसपास पहूँचती हैं जिसमें कविता संग्रह, उपन्यास, कहानीसंग्रह, रेखाचित्र, निबंध संग्रह, आलोचनात्मक ग्रंथ, अनुवाद जीवनियाँ, नाटक तथा स्फूट रचनाएँ आदि सभी कुछ लिखे हैं।

उनको कवि रूप में ही अधिक ख्याति मिली। उनके काव्य संग्रह हैं -- अनामिका, परिमल, गीतिका, अनामिका [नवीन], कुक्कुरमत्ता, अणिमा, बेला,

आराधना, गीतगूंज, अर्चना, नये पत्ते, तुलसीदास आदि। इनके और दो काव्य संकलन हैं, जिसमें " अपरा" काव्यश्री भी है।

प्रमुख कविताओं का परिचय जिसमें मैंने "जुही की कली ", "तोडती पत्थर", " सरोज स्मृति," " छ, शिवाजी का पत्र", " विधवा ", "दान", आदि अनेक कविताओं का संक्षेप में परिचय दिया हैं। कविताओं में उपमाएँ कल्पनाएँ, विषयभाव शैली सबकुछ नया है। दर्शन क्षेत्र में वे अद्वैतवादी है , इनके काव्य में युगीत प्रवृत्तियाँ विद्यमान हैं, तथा अनेक प्रवृत्तियाँ भी विद्यमान है।

" निराला ", आधुनिक युग के असाधारण प्रतिभासंपन्न कवि थे। काव्य के अनेक रूपों को उन्होंने सिर्फ देखा परखा ही नहीं बल्किअपने काव्य में उसे अंकित भी किया है। यही कारण है कि उनके काव्य में अनेक प्रवृत्तियाँ एक साथ प्रबलता पूर्वक विद्यमान हैं। इनके काव्य का विषय विस्तार इतना बडा है कि इस लघु शोध प्रबंध में इसका अध्ययन विस्तार पूर्वक करना बहुतही कठिण कार्य हैं। उनके युग में प्रवाहित काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ तो इनके काव्य में पूर्णत: प्रतिबिंबित हैं ही मगर सूक्ष्मता से देखने पर इनके काव्य में अनेक प्रवृत्तियाँ अपना अपना पूर्ण रूप प्रस्थापित करती हैं। काव्य युगों के आधार पर अगर अगर इनकी रचनाओं को छायावाद, रहस्यवाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद आदि में विभाजित करें गे तो अनेक प्रवृत्तियाँ गौण रूप से विश्लेषित होगी। इस हेतु के कारण मैंने इस लघु शोध प्रबंध में छायावाद, रहस्यवाद, प्रगतिवाद, प्रकृतिवर्णन, नारी, गीतितत्व, राष्ट्रीय विचारधारा, संघर्षपूर्ण जीवन का प्रतिबिंब, यथार्थवादी, स्वर, सौंदर्य और प्रेम तथा व्यंग्य इन प्रवृत्तियों के स्थित रूप की खोज को अध्याय चार में विश्लेषित किया है।

" अपरा " काव्य संकलन में सन १९१६ से १९४३ तक की ज्यादातर रचनायें हैं, जिनमें से अधिकतर कविता छायावादी हैं। इस संग्रह से यह भी होता हैं कि निराला छायावाद के सक्षम कवि है। उन्होने छायावादी भाषा को नूतन पदावली देकर समृध्द किया है साथ ही साथ भाषा को गुढतम भावों की अभिव्यक्ति की शक्ति भी प्रदान की है। प्रस्तुत के स्थान अप्रस्तुत कथन की नयी परपंरा तथा नये ढंग से अलंकारो की व्यंजना की गयी है। भाषा में ध्वन्यात्मकता और संगीतात्मकता प्रदान की गयी है। निराला ने मुक्त छंद की देन से छायावाद को प्राणवान बना कर नव कवियों को प्रेरणा का मंत्र दिया। इन कलापक्ष की विशेषता के साथ साथ भावपक्ष में वैयक्तिकता प्राकृतिक चित्रण, सौंदर्य तथा प्रेम, रहस्यानुभूति, राष्ट्रभक्ति, नारी का नया रूप तथा मानवतावाद आदि विशेषताओं से युक्त रचनाओं की संख्या अधिक है। वैसे इन रचनाओं को छायावाद युग के कालक्रम में बाँध नहीं दिया जा सकता क्योंकि यह रचनायें उस युग के पूर्व भी है, युग में भी है और युग के बाद में भी। इस तरह अपरा में छायावाद प्रवृत्ति सबल रूप में विद्यमान है।

उपनिषद ज्ञान के आधार माने गये हैं, उसमें अद्वैत तत्व की सर्वव्याप्ति का प्रतिपादन है। हिन्दी के रहस्यभाव के दार्शनिक पक्ष का विकास उपनिषदों के आधार पर निर्भर है। निराला ने अपने काव्य में वही तत्व ग्रहण किया है। निराला के मानसिक विकास के समय बंगभूमि, स्वामी विवेकानंद तथा रामकृष्ण परमहंस के विचारों का प्रभाव समा गया है। प्रभाव के साथ साथ इनके जीवन में जो अनेक घटनाएँ ऐसी घटित हो गयी जिसके कारण उनके मानसिक अवस्था को बहुत बार दु:ख सहना पडा। आज जो मानसशास्त्र में साम्यवाद का मानसव्यवहार चलता है, उसके आधार पर कवि अगर रहस्यभावना पर विश्वास न रखते तो उन्हे जीवन बिताना कठीन होता, यही कारण है कि, उनके काव्य में रहस्यानुभुति नजर आती है। उन्हो ने प्रकृति के प्रत्येक एक वस्तुपक्ष

को विस्मय और जिज्ञासा भाव से देखा हैं। कवि विद्रोही एवं भावुक है, यह हम उनके व्यक्तित्व में देख चुके हैं। जिस का कारण निरस जीवन के पथ पर वह सदैव आशा के किरण ढूंढते रहे हैं। " अपरा " संकलनमें रहस्यानुभुति इस प्रवृत्ति के अंतर्गत अध्ययन करते समय यह दृष्टिगत होता है कि जिज्ञासा मिलन स्थितियों की अपेक्षा विरह की स्थितिकी मात्रा कम हैं। बौध्दिकता के कारण कही कही रचनाएँ निरस बन पडी है, फिर भी सहृदयता पूर्ण अनुभूति के संयोग के कारण इनकी रहस्यानुभूति प्राय: सरस और रमणीय रही। अध्ययन की सुविधा के लिए मैंने अपरा में प्रकृतिपरक, योगपरक, सौंदर्य परक, प्रेमपरक और भक्तिपरक रहस्यवाद का स्थित रुप दिखाया है। विरह जिज्ञासा और मिलन स्थिति के उदाहरण प्रस्तुत करके अपरा में इस प्रवृत्ति का सक्षम रुप दर्शाया है।

सन १९३५ के आसपास जिस नविन काव्यधारा का हिन्दी काव्य जगत में दर्शन हुआ असे ही " प्रगतिवाद " कहा गया। उसके तत्वों को विद्वानों ने इकठ्ठा करके इस काव्यधारा का संभाव्य रुप स्थित किया। कहा जाता है कि इस काव्यधारा के उदय के पीछे रुस के क्रांति का परिणाम हैं। यह क्रान्ति और कवियों की प्रेरणा रही होगी। मगर कवि निराला के विचार पहले से ही विद्रोही तथा मानवतावादी होने के कारण उनमें साम्यवाद की भारतीय संस्कृतिकमय आपदृष्टि थी। मैं यह कहना नहीं चाहता कि उनके काव्य पर रुस के क्रांति का कोई भी परिणाम नहीं है। परंतु इनके काव्य की प्रारंभिक प्रगतिवादी रचनाओं पर रुस के क्रांति की छाप नही है। सन १९३७ में लिखी " बनबेला " कविता में इस साम्यवाद का गुणगान किया है, परंतु इनकी अनेक रचनाओं में प्रगतिवादी कवियों की तरह साम्यवाद की चेतना नहीं हैं। सन १९१९ से १९३० तक की अनेक कविताओं में क्रांतिकारी विचार हैं जो प्रगतिवादी धारा की विशेषतासे युक्त हैं। प्रगतिवादी कवि

यथार्थ के नामपर नग्न तथा अश्लिल चित्रण करते हैं। परंतु इनकी रचना में प्राय: श्लिल सृजन पाया गया हैं। "भिक्षुक ", " विधवा ","वह तोडती पत्थर ", आदि कविता यथार्थता के सुंदर उदाहरण है। अनिश्वरवाद की अभिव्यक्ति इनके काव्य में कही भी नजर नहीं आती। किसान, सामान्य जन, भिक्षुक के प्रति गहरी सहानुभुति इनके काव्य में प्रदर्शित हुई है। नारी के प्रति आदरभावना इनके काव्य में व्यक्त हुई है। नेताओं की झूठी प्रशंसा करने वाले बिकाऊ कवि तथा राजकीय सहारा मिलने वाले को संमेलनो के अध्यक्ष बनाना इसतरह के सामाजिक अनैतिक व्यवहारोंपर व्यंग्य करता है। मार्क्स के द्वंद्वात्मक भौतिकवाद की प्रेरणा से जो प्रगतिवादी कवि बने हैं, उनमें और निराला में बहुत ही अंतर है। निराला में जो मानवता दिखाई देती है वह सहृदयता से युक्त है, प्रेरित तथा आरोपित नहीं है। इस तरह निराला की साम्यवादी तथा प्रगतिवादी दृष्टि भारतीय मानवता का आदर्श रूप है।

" अपरा " काव्यसंकलन में प्रकृति का व्यापक एवं विशाद वर्णन है। प्रकृति के अनेक अंगो - उपांगों का, क्रिया - कलापो का मानवीय व्यवहारोंसे नाता जोडना इनके बौध्दीकता का तथा प्रकृति प्रेम का परिचायक है।

इनकी रचनाओं में प्रकृतिका मानवीकरण पाया जाता है, जो छाया-वादी युग में अधिक कवियों ने अपनी रचनाओं में किया है। प्रकृति के कोमल सामान्य तथा कठोर रूपों के वर्णन इनके काव्य में विद्यमान है। प्राकृतिक व्यवहार से आत्मा परमात्मा का संबंध स्थापित, करने का सुंदर प्रयास "अपरा" में देखने को मिलता है। इनकी रचनाओं में संन्ध्या, रात्री, मध्यरात्री तथा उषा का वर्णन पाया गया है। प्रपात, तरंग, सरिता, बादल इनके काव्य के

विषय बने हैं। सभी ऋतुओं का विशेष चित्रण नजर आता है। फूलो में बेला, जुही उल्लेखनीय हैं। " बादल " तो निराला का अभिन्न अंग हैं। प्रात: कालीन सुषमा चित्रण को विशेष स्थान प्राप्त है। प्राकृतिक उपादनों के सहारे अनेक अलंकारों का प्रयोजन इनके काव्य में हुआ है। इस तरह प्रकृति चित्रण की प्रवृत्ति विशेष उल्लेखनीय है।

विविभन्न देशों की विभिन्न संस्कृतियाँ एवं धारणायें होती हैं, जहाँ नारी के रूपों में साधारण फरक भी हैं। परंतु " अपरा " में जो चित्रित नारी है वह नितांत भारतीय संस्कृति के आधार पर है। आदिकाल तथा भक्ति काल के साहित्य में नारी को विशेष स्थान नहीं है, रीतिकाल में वह भोग्या थी। आधुनिक काल के प्रारंभिक काल में सहानुभूति तथा आदरभावना नारी को प्रदान की और उसमें आत्मनिर्णय सिध्दान्त को जगाया। "अपरा" में नारी के अनेक रूप उल्लेखनीय हैं। "प्रेयसी" रूप में विशेष दृढता हैं, जो पाश्चात के भाँती नजर आती हैं। वह प्रेयसी जो भिन्न जाति धर्म के प्रियकर को अपना सर्वस्व प्रदान करती है। यह भारतीय संस्कृति के खिलाफ हैं परंतु ऐसे प्रकार भारतीय लोक कथाओं में विद्यमान हैं। " अपरा " की जो पत्नी है वह सलाहकारीती हैं। माता तथा पुत्री के चित्रण भी है। प्रगतिवादी काल के तथा छायावाद के अनेक कवियों ने नारी सौंदर्य तथा यौवन के मादक चित्रण चित्राये हैं। इनकी रचनाओं में मादक चित्रण की एक भी रचना नहीं हैं। नारी के विधवा समस्या पर कवि की गहरी सहानुभुति अभिव्यक्त हैं। भारत के आर्थिक कठिनाइयों से झगडनेवाली नारी के रूप में उसकी दयनियता को भी व्यक्त की हैं। अतत: नारी के सभी रूप उदात्त तथा गरिमामय हैं।

" अपरा " में गीततत्व का पूर्ण निखार उतरा है। कुछ गीत असाधारण प्रतिभा से युक्त हैं, जिनमें " सरोज स्मृति ", " राम की शक्ति पूजा ",

" छत्रपती शिवाजी का पत्र ", आदि। संगीतात्मकता लय बध्दता, भावप्रवनता साथ ही साथ आत्मभिव्यक्ति इनके गीतो में विद्यमान है। संक्षिप्तता तत्व पर अनेक जगह कवि बंधन नहीं रख सके। कल्पना प्रचुरता, चित्रण दक्षता, एवं प्रभावशाली शाब्द योजना इनके गीतिकला कों प्रकट करती हैं। प्रार्थना परक गीतो में नम्रता, प्रकृति परक गीतों में वैविध्यता, नारी सौंदर्य से युक्त गीतों में शालीनता तथा राष्ट्रीय गीतों में शौर्य को चित्रित किया हैं। सम्बोध गीति के गीतो में रहस्यानुभुति तथा शोक गीति में आप बीति प्रकट हैं। पत्र गीति के दो ही उदाहरण हैं जिनमें राष्ट्रीय भावना तथा व्यंग्य विद्यमान हैं। अख्यायक गीति की एक रचना हैं जिसमें संस्कृति का दर्शन होता हैं। इस तरह " निराला " एक गीतिकार का स्थ प्रस्थापित करते हैं।

आधुनिक युग में भारतीय साहित्यकारों ने हिन्दी के जरिये भारत में जन जागरण किया, जिसमें पत्र पत्रिका ओं के साथ साथ साहित्य का भी साथ रहा। हम पिछले कई शतको से पराधीन रह चुके इसके पिछे भारतीयों को समुचित राष्ट्रीयता का कारण हैं। भारतीय मिट्टी से बने निराला की राष्ट्रीयता व्यक्तित्व तथा कृतित्व में झलकती हैं। इनके कविता में नव - जनजागरण दिखाई देता हैं। भारत के नवजवानों में निद्रावश शूरता को ऐतिहासिक शूरवीरों की शूरता याद दिलाकर जगाना चाहते हैं। भारतीयों में संघटना बनाना चाहते। विदेशी सत्ता का भारत में विस्तार होने के पिछे आपनी फूट तथा आपसी कलह मुख्य कारण हैं। अँग्रेजी की सरकार भारतीय नागरिकों को नौकरियाँ देकर रखते थे, और अँग्रेजी आफ्सर उन्हे अपने तरीके से काम करवाते थे। इस विषय में कवि अग्रेंज के पक्षं में काम करने वाले को स्वाधीनता संग्राम में शामिल करना चाहते हैं, इसका परीक्ष उदा. " छ. शिवाजी का पत्र ", कविता में विद्यमान है। भारत माता के राष्ट्र-

भक्तिपरक गीत भारतीयों को राष्ट्रभक्ति से प्रेरित करते हैं। भारत के जाति एकता को भी उन्हों ने अपने काव्य में स्पष्टतासे दशायिा हैं। जन्म भुमि की भाषा तथा जन्मभुमि को एक ही स्तर पर रखा हैं। भारत के पराधीनता के कारण वे राजनीतिक क्षेत्र में क्रांती लाना चाहते थे, उन्हे बन्धन से काफी घृणा थी। दिन, दान, भिक्षुक तथा तोडती पत्थर कविताओं के मूल में राष्ट्रीय आर्थिक विषमता का चित्रण हुआ हैं। भारत के सुवर्णकाल के दिनों तथा उसकी दुरावस्था को देखकर राष्ट्रीय सांस्कृतिक पतन को और पतित करना नहीं चाहता हैं। " सहस्त्राब्दी ", "तुलसीदास" तथा अन्य कविता इसके उदाहरण हैं। कवि का कहना है कि, भारतीयों! तुम पशु नहीं हो वीर पुरुष हो। तुम चाहो तो विश्वपर विजय प्राप्त कर सकते हो अपना आत्मबल छोटा न करो। इस तरह अपरा में राष्ट्रीयता कूटकूट कर भरी हुई हैं।

व्यक्तित्व में हम देख चुके हैं कि निराला ने अन्दर और बाहर के दुहरे संघर्ष को झेला है। अपरा संकलन की एक प्रवृत्ति यह भी हैं कि, उनके काव्य में संघर्षपूर्ण जीवन का प्रतिबिंब दिखाई देता हैं। मनो वैज्ञानिक आधार पर यह स्पष्ट है कि, साहित्य में साहित्यकार अपने व्यक्तित्व की छाप छोडता हैं। छायावाद युग कवियों को चुनौतीदायक युग रहा क्योंकि द्विवेदी युगीन काव्य की छन्द बध्दता को कवि छन्द के बंधनों से मुक्त करना चाहते थे। स्वयं निराला ने सर्वप्रथम कविता के परम्परागत छन्दों के बंधनों से युक्त करके मुक्त छन्द की रचना की थी। जिसके कारण उनके काव्य को तत्कालीन विद्वानों ने रबड छन्द एवं केचुआ छन्द कहा था। निराला की प्रारंभिक रचनाये द्विवेदीजी ने लौटाकर उन्हे आघात पहूचाया परंतु कवि गेंद की तरह उछल पडे और साहित्य क्षेत्र में संघर्ष को अपना कर सिमा को पार

कर गये। परंतु उनके साहित्य को उपेक्षित भाव से देखने के कारण उनके रचनाओं में असफलता हताशा निराशा के भाव पाये गये हैं। अपरा के गीत वेदनानुभूति के परिचायक है। व्यक्तिगत वेदना, सामाजिक वेदना, परिचारीक वेदना, मानसिक वेदना का प्रत्यक्ष रूप इनके " सरोज स्मृति " में विद्यमान हैं। साहित्यिक प्रताडना के प्रति " बनबेला ", " हिन्दी के सुमनों के प्रति पत्र ", आदि कविताओं में व्यक्त हैं। वेदना का मूल भाव करुणा या शोक होता हैं परंतु जिसका वर्णन शौर्य के परिधि से ही परिचित होता हैं। जीवन में अनेक दु:खद घंटनाओं के बावजुद इनके जीवन में प्रतिकुल परिस्थितायाँ कायम रही। यही कारण हैं कि, इनकी रचनाओं में असफलता, हताशा, निराशा, अपमान, बाधा, चिन्ता, खिन्नता, विरह, ग्लानी, पिडा, एकाकीपण के भाव चित्रित हैं। उनके जीवन में अर्धविपन्नता कायम रही जिसके कारण वह अपनी प्रिय पुत्री का इलाज न कर सके ना ही पुत्र को अच्छी शिक्षा दे पाये और ना अपनी खातीरदारी की। इनका संघर्ष अपनी जीवन से था जो अनेक अपत्तीयों को सह कर साहित्य - साधना को स्व-अर्पण करना चाहता था। "अपरा" में कुछ रचनाओं में आत्म समर्पण भाव भी विद्यमान है., जिसके पीछे उनका एकाकीपण है। अंतत: यह कहना सही है कि, उन्होंने संघर्षपूर्ण जीवन से सब से अधिक समय साहित्य साधना पर व्यय किया हैं, परंतु साहित्यिको ने तथा समाज ने उन्हे उनका प्रतिफल नहीं दिया।

अपरा में वह " तोडती पत्थर ", भिक्षुक", " दान ","विधवा ", जैसी कविताओं में यथार्थ स्वर विद्यमान है, परंतु अन्य प्रगतिवादी कवियों की तरह उनमें अश्लील वर्णन नहीं हैं। मजदूर समस्या किसान समस्या, धार्मिक समस्या, भिक्षु चिन्ता का यथार्थ चित्रण इनके काव्य में मिलता हैं। पूर्व

उत्तर प्रदेश में रहने वाले कान्यकुब्ज ब्राम्हणो के रहन - सहन का यथार्थ चित्रण इनके काव्य में चित्रित हैं। शहरी तथा ग्रामीण जीवन की समस्या भी इनके सरस्वतीमें यथार्थता पर उतरती हैं। कवि मानवतावादी होने के नाते उनसे सांस्कृतिक पतन देखा नहीं गया, उनके काव्य में उसका चित्रण हुआ हैं। उनके काव्य में स्म में नीजी दु:ख अभिव्यक्त हुआ है जो उनके जीवन का यथार्थ चित्रण हैं।

निराला के " अपरा " काव्य संकलन में सौंदर्य एवं प्रेम को भावना का सुंदर चित्रण हुआ है। नारी के सौंदर्य एवं प्रणय भावना के शोभाशाली वर्णन अनेक जगह विद्यमान हैं।

निराला के सौंदर्य भावना के चित्रण में सौंदर्य के प्रति स्वस्थ आकर्षण सर्वत्र विद्यमान हैं। लौकिक प्रेम की कुछ रचनाएँ उन्हों ने अपनी पत्नी एवं प्रेयसी को लक्ष्य करके लिखी हैं। पुरुष सौंदर्य में वीर एवं शौर्य के चित्रण तथा बाल सौंदर्य में बाल्यकालीन क्रियाओं का चित्रण किया हैं। नारी सौंदर्य में उनके शरीरांगो का सूक्ष्म संयमित एवं शुध्द चित्रण हुआ है, जिसमें मादकता एवं मांसलता न के बराबर हैं।

मुक्त प्रेम का चित्रण "अपरा" में दृष्टव्य है, जो हमारी समाज में अमान्य माना जाता हैं परंतु प्रेम व्यवहार में पवित्र हैं। प्रेम वर्णन में सूक्ष्म एवं मांसल वर्णन कहीं कहीं दिखाई देते हैं, परंतु वे भड़कीले नहीं हैं। ऐसे जगह आध्यात्मिक या रहस्यभावना की गंध मिश्रित होने के कारण वे चित्रण गरिमा युक्त एवं संयमित लगते हैं। व्यक्तिगत प्रेमभावना से युक्त प्रेमवर्णन पत्नी प्रेम निरूपण, तथा प्रेमिका प्रेम चित्रण शिलल एवं स्वस्थ हैं।

व्यंग्य एक ऐसी साहित्यिक अभिव्यक्ति या रचना है, जिसमें व्यक्ति परिवार, समाज और राष्ट्र की समस्त बुराईयों, कमजोरियाँ, अंतर्विरोध, विसंगतीयाँ करनी और कथनी के अन्तरो की समिक्षा भाषा को टेढी देकर उन्हे सुधार के लिए किया गया शाब्दिक प्रहार, जिसे हम व्यंग्य कह सकते हैं। " अपरा " में व्यंग्यप्रवृत्ति सबल दृष्टिगत होती हैं। वैयक्तिक व्यंग्य, निर्वैयक्तिक व्यंग्य के साथ साथ यथार्थता चित्रित हुई हैं। रचनाकालीन युग की सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक , राजनितिक, साहित्यिक, एवं आर्थिक पक्षो पर व्यंग्य करते हैं। " अपरा " में हास्य युक्त व्यंग्य न के बराबर हैं। इस संकलन के व्यंग्यों में कटुता तिक्तता तथा नुकिलापण है। समाज की बुराईयाँ जिसमें विधवा की समस्या को चित्रित किया है। सांस्कृतिक व्यंग्य में मानवतावादी मूल्यों के पतन पर प्रहार किया हैं। धार्मिक ढोंग पर भी इन्होंने तीखा व्यंग्य किया हैं। साहित्यिक क्षेत्र में जो व्यंग्य है उसमें सम्मेलनों के अध्यक्ष वातावर तथा साहित्यीको के बिकाऊ दृष्टि पर तीखे व्यंग्य किये हैं। राजनिति जो साम्यवाद अपना कर समाजहित दिखाकर अपना हित करना चाहते हैं उनके उपर भी व्यंग्य किया हैं। आक्रोश, कटाक्ष, कठोर वचनों से समाज के बुराईयों को दूर करने का प्रयास निराला ने किया है। अपना हक मांगने के लिये वे क्रान्ति का नारा लगाते हैं। सामाजिक सुधार एवं बदलाव की अपेक्षा इनके " अपरा " में व्यक्त हैं। इस तरह अपनी सामाजिकता निभाने का कार्य कविने किया है। व्यंग्य प्रवृत्तिसे युक्त रचनायें " अपरा " में कम मिलती हैं। परंतु जितनीं रचनायें हैं उनमें व्यंग्य प्रवृत्ति सबलता से प्रकट हुई हैं।

निष्कर्ष :

निराला का अपरा काव्यसंकलन कवि के समस्त काव्यसाधना का प्रतिनिधित्व करता हैं। यह संकलन एक आधुनिक हिन्दी काव्य साहित्य की प्रयोगवाद तक की सभी धाराओं की अधिकांश विशेषतायें इस संकलन में मौजूद है।

छायावाद, रहस्यवाद, प्रगतिवाद, प्रकृतीवर्णन, गीतितत्व, राष्ट्रीय विचारधारा, संघर्षपूर्ण जीवन का प्रतिबिम्ब, यथार्थवादी स्वर, सौंदर्य एवं प्रेम तथा व्यंग्य यह प्रवृत्तियाँ अपनी अधिकतर विशेषताओं से युक्त " अपरा " में विद्यमान हैं। जिससे हम यह कर सकते हैं कि, हिन्दी के आधुनिक काव्य की ऐसी कौनसी भी प्रवृत्ति बाकी नहीं रही हैं। छायावाद को तो प्राण-वान स्म हैं। प्रगतिवाद के निराला आद्य कवि हैं, जो सच्ची मानवता का आक्रोश हैं। साम्यवाद का झंडा तथा प्रगतिवाद धारा के तत्वों का सहारा दिये बिना लिखी रचनाओं का शुध्द मानवता से प्रेरित प्रगतिवाद निराला में मिलता है। जिसमें अस्थिर अनिश्चर वाद, यथार्थता के नामपर अनावश्यक वर्णन शून्यवत शून्य हैं। प्रकृतिवर्णन में कठोर तथा कोमल पक्षों का भावा-भिव्यक्ति के स्वर पर सुन्दर चित्रण हुआ हैं। गीतितत्व तो पूर्ण उतरा है, जिससे निराला का गीतिकार स्म भी स्पष्ट होता हैं। राष्ट्रीय विचारधारा में वे सजग राष्ट्र भक्त हैं ही परंतु राष्ट्र के वीर पुरुषों के प्रति आदर तथा भावी काल में विकास चाहते हैं। यथार्थता में समाज के सभी पक्षों का उद्घाटित करते हैं, जिससे वे सत्यता को दिखाकर हित की अपेक्षा रखते हैं। सौंदर्य तथा प्रेम निरूपण में उनकी काव्य पीछे नहीं हैं, जिसमें नारी तथा पुरुष सौंदर्य को चित्रित किया हैं। साथ ही साथ प्रेम चित्रण भी विरल स्म में वर्णित हैं। निराला का व्यंग अधिक नुकीला हैं जिसमें हास्य व्यंग्य न के बराबर हैं। इस तरह इस ग्यारह प्रवृत्तियों के खोज के साथ निरालाजी पर जितना भी शोधकार्य हो उतना ही कम हैं, निरालाजी पर शोधकार्य निरंतर हो रहा हैं, अपरा में मानवता, वेदनानुभुति, अध्यात्मचिन्तन, कल्पनातत्व, बौध्दिकता, तत्कालीन परिस्थितियों का भाव बोध आदि पक्षों का भी चित्रण हुआ है जिसके मैंने संकेत दिये हैं।